नं. ९८ ५८५

ग्रं.सं. १५७

श्रीरामस्तवराज - हिन्दी टीका

९६

[illegible]

श्रीमतेरामानुजायनमः श्रीजानकीवल्लभोविजयतेतराम् श्रीमन्मारुतनंदनायनमः यह जो श्रीरामचंद्र अस्तवराजस्तोत्र मंत्र तिसके सनत्कुमार ऋषी है सनत्कुमार ऋषीकौं कहा प्रथम पठन किया तातें औ अनुष्टुप छंदकौं कहा इस अस्तोत्र मैं अनुष्टुप छंद बहुत है और छंद थोरे है यातें औरको गौंन जानि अनुष्टुप छंदको मुख्य जानि अनुष्टुपे छंद कहा औ ऋषि जिनका भेद कहते है जौन ऋषीने प्रथम गायत्री मंत्र अस्तोत्रादि पठन जप किये तेई तिसके ऋषि भये औ तिनही द्वारा संपूर्ण जगत मे प्रचुर भया नाम प्रगट भया सबको सुलभ भया श्रीरामो देवता कही श्रीरामजी तिन करिके कथित है सो अस्तवराज रामायण आत्मक है॥ औ बीजं कही सबका मूल कारण है सीता बीजं कही श्रीसीताजी के चरित को श्रीवाल्मीकजीने मह

जं

श्रीजानकीवल्लभोविजयतेतराम् ॐ अस्य श्रीरामचंद्र स्तवराजस्तोत्र मंत्रस्य सनत्कुमार ऋषिरनुष्टुप् छंदः श्रीरामो देवता सीताबीजं हनुमान् शक्तिः श्रीराम प्रीत्यर्थे जपे विनियोगः १ सूत उवाच सर्वशास्त्रार्थतत्वज्ञं व्यासं सत्यवती सुतम् धर्मपुत्रः प्रहृष्टात्मा प्रत्युवाच मुनीश्वरम् २ युधिष्ठिर उवाच

तें पद दिया तत्र प्रमाण काव्यं रामायणं कृत्स्नं सीतायाश्चरितं महत् औ हनुमान शक्ति कही श्रीरामजी के हेतु श्रीसीताजी को श्रीरामजी के मिलाउने हेतु अपनी शक्ति बलते सेतु निर्माण किया औ महा औषधि ल्याये राक्षसो का वध किया तातें [illegible] हनुमा शक्ति कहा इस अस्तवराज का जप पाठ श्रीराम प्रीति के अर्थ है श्रीसूतजी शौनजी से कहते भये प्रसन्न आत्मा जो युधिष्ठिरजी सो मुनिन के ईश्वर जो व्यासदेवजी तिनको पूछते भये कैसे है श्रीव्यासजी संपूर्ण शास्त्रौं के अर्थ का जो सार तिसको जानने वाले है॥ पेर

श्री

स्वयंप्रकाशमानशीचिदघनत्वदर्शित ५

भये कैसे है सत्यवतीपुत्र है २ युधिष्ठिरजी कहतै॥ हे भगवन् हे योगिन मैं श्रेष्ठ संपूर्णशास्त्र मैं चतुर॥ कौ
नतत्व कौन परम उत्कृष्ट जाप कौन मुक्तिके सिद्ध करनेवाला ध्यान है हे मुनिन मैं श्रेष्ठ सो संपूर्ण
मैं सुननेकी ईछा करता हू मेरे ताई कहो ३ श्रीवेदव्यासजी कहत भये॥ हे धर्मपुत्र राज हे महाभाग
वाले तत्व जो परमार्थ तिसको सुनु मैं कहोंगा ४ जो सब ते पर जो सत्व रज तम तीनों गुणते रहित जो
ज्योति निर्मल मंगलदाई सो परम उत्कृष्ट तत्व सोई मुक्तिस्थानका कारण है ५ श्रीराम एही परम जो
राम६ जपनेके योग्य जो उपासोर एही ब्रह्म जिसको कहते है सो भी एही श्री तारक जो मंत्र कहते है सो भी एही है ब्र

भगवन् योगिनां श्रेष्ठ सर्वशास्त्रविशारद किंतत्त्वं किं परं जाप्यं किं ध्यानं मुक्तिसाधनम् ३ श्रोतु
मिच्छामि तत्सर्वं ब्रूहि मे मुनिसत्तमः श्रीवेदव्यास उवाच धर्मराज महाभाग शृणु वक्ष्यामि तत्वतः
४ यत्परं यद्गुणातीतं यज्ज्योतिरमलं शिवम् तदेव परमं तत्वं कैवल्यपदकारणम् ५ श्रीरामेति परं जा
प्यं तारकं ब्रह्मसंज्ञकम् ब्रह्महत्यादिपापघ्नमिति वेदविदो विदुः ६ श्रीरामरामेति जना ये जपंति च सर्व
दा तेषां भक्तिश्च मुक्तिश्च भविष्यति न संशयः ७ स्तवराजः पुरा प्रोक्तो नारदेन च धीमता [illegible] तत्सर्वं स
प्रवक्ष्यामि हरिध्यानपुरःसरं ८

ह्महत्यासे आदि लेकर के और जो गोहत्या स्त्रीहत्या बालहत्या इत्यादिक पापोंके नाश करनेवाले भी ए
ही राम है ऐसे वेदको जाननेवाले जानते है ६ जो पुरुष श्रीरामराम ऐसे जो सर्वदा कालमे जपते है तिन
कों भुक्ति भोग ऐश्वर्य और मुक्ति मोक्ष होवेगी इसमै संदेह नही है ७ बुद्धिमान जो श्रीनारदजी तिनने पू
र्व कह्यो है स्तवराज सो संपूर्ण मैं भली प्रकार कहोंगा॥ हरिका जो ध्यान सोइ है अग्रगामी मुख्या जिन ८
के ८

के ८ सोकैसे[illegible]साहैश्रीरामकानाम अधिभौतिक अधिदैविक अध्यात्मिक एजोतीनिप्रकारकेता
पहैसंतापइनकेशांतिकरनेवाला औरसंपूरणपापोंकेसमूहछेदनकरनेवालानाशकरनेवालाफे
रकैसाहैदारिद्र्यअरुदुःखकोशांतिकरनेवाला अरुसंपूरणसंपतिकहियेऋद्धिसिद्धिऐश्वर्यऔरशि
वकल्याणइनकोकरनेवाला ९ जगतकारूपजोहैश्रीरामकृष्णनामश्यामहै इनकोनमस्कारकर
केमैंकहताहौंकैसेहैरामदिव्यकहियेजोविज्ञानमुक्तिरूपफलतिसकेदेनेवाले अरुमोक्षरूपजोएक

तापत्रयाग्निशमनंसर्वाघौघनिकृंतनम् दारिद्र्यदुःखशमनंसर्वसंपत्करंशिवम् ९ विज्ञान
फलदंदिव्यंमोक्षैकफलसाधनम् नमस्कृत्यप्रवक्ष्यामिरामंकृष्णंजगन्मयम् १० अयोध्यान
गरेरम्येरत्नमंडपमध्यगे स्मरेत्कल्पतरोर्मूलेरत्नसिंहासनंशुभम् ११ तन्मध्येष्टदलंपद्मंनानार
त्नैश्चवेष्टितम् स्मरेन्मध्येदाशरथिंसहस्रादित्यतेजसम् १२ पितुरंकगतंराममिंद्रनीलमणिप्रभं स
कोमलांगंविशालाक्षंविद्युद्वर्णांबरावृतम् १३

फलतिसकेदेनेवालेहै १० अबध्यानकहतेहैरमणीयजोश्रीअयोध्याजीनगरतिसमेंजोकल्पवृक्षति
सकेनीचेजोरत्नजटितसिंहासनसोकैसाहैकीरत्नजटितमंडपहैचारौओरजिसकेऐसाजोशुभअर्थातति
सकोस्मरणकरैं ११ तिसीसिंहासनकेबीचमेनानाप्रकारकेरत्ननकरिकेशोभितहै उसहीकेमध्यमें
हजारोंसूर्यकेतुल्यहैतेजजिनका ऐसेजोश्रीदाशरथीश्रीरामतिनकोस्मरणकरै १२ कैसेहैश्रीरा
मपिताकीअंकगोदमेप्राप्तहै नीलमणिकेसदृशहैकांतिजिनकीकोमलहैअंगजिनके अरुविशा
लनेत्रहै विद्युत्सरीरकावर्णजिनमेंऐसेवस्त्रोंकरिकेआवृतकहीआच्छादितहै १३

रत्नजटितकंकरा कोटिसूर्यकेसदृशप्रकाशजिसका ऐसे [illegible] किरीटकरकेशोभितहै रत्ननौं
दि काकंठभूषणजोकंठोअोर वाजूबंद औररतनौंकाजोकुंडलतिनकरकेशोभितहै १४ रतनजटितकंक
णअरु मंजीरनूपर कटिसूत्रकर धनीकनकसेग्रहिदोलरकटिवंधनडोरवातअगीइनकरकेशोभितहै
श्रीवत्सलक्ष्मीकाचिन्हअरुकौस्तुभमणिहैउरस्थलमैजिनकेमुक्ताहारोंकरकेशोभितहै १५ दिव्यक
हिश्रेष्ठरतनौंकरकेयुक्तामुद्रिकामुदरी[illegible]रशोभितहै श्रीराघवहैदोहैभुजाजिनकीवालकरूपहैश्री

भानुकोटिप्रतीकाशंकिरीटेनविराजितम् रत्नग्रैवेयकेयूरंरत्नकुंडलमण्डितम् १४ रत्नकंकण
मंजीरकटिसूत्रैरलंकृतम् श्रीवत्सकौस्तुभोरस्कंमुक्ताहारोपशोभितम् १५ दिव्यरत्नसमायुक्तमुद्रि
काभिरलंकृतम् राघवंद्विभुजंवालंराममिषत्स्मिताननं १६ तुलसीकुंदमन्दारपुष्पमाल्यैरलंकृ
तम् कर्पूरागरुकस्तूरीदिव्यगंधानुलेपनम् १७ योगशास्त्रेष्वभिरतंयोगेशंयोगदायकम् सदा
५ भरतसौमित्रिशत्रुघ्नैरुपशोभितम् १८ विद्याधरसुराधीशसिद्धगंधर्वकिंनरैः योगीन्द्रैर्नारदाद्यैश्च
स्तूयमानमहर्निशम् १९

राम कैसेहै मंदमंदहास्ययुक्त है आनन मुखजिनका १६ तुलसीअरुकुंदमंदारइत्यादिकपुष्पमाला
करकेशोभितहै करपूरअोअगरुकस्तूरीइत्यादिकश्रेष्ठगंधौंकरकेलेपनयुक्त है १७ योगशास्त्रौंमैंआ
सक्तहैं योगकेस्वामी है योगकेदेनेवालेहैं सर्वदाकालमैभरतअरुलक्ष्मणअरुशत्रुघ्न[illegible]रूपकहीसमीप
इनकरकेशोभितहै १८ विद्याधरअरुसुराधीशकहीदेवतौंकेस्वामीदेवतासिद्धगंधर्वकिंनरयोगीन्द्रना
रदादिकमुनिनकरकेदि[illegible]नअरुरात्रिस्तूयमानकहीयेसवअस्तुतिकरजोरेकरतेखडेहैंश्रीरामके

रत्नजटितकंकण कोटिसूर्यकेसदृशप्रकाशजिसका ऐसे [illegible] किरीटकरकेशोभितहै रत्नों
८ काकंठभूषणजोकंठी और बाजूबंद और रतनौंकाजोकुंडलतिनकरकेशोभितहै १४ रतनजटितकंक
णअरु मंजीरनूपुर कटिसूत्रकरधनीकनकसेग्रहिदोलरकटिबंधनडोरवातअगी इनकरकेशोभितहै
श्रीवत्सलक्ष्मीकाचिन्हअरुकौस्तुभमणिओउरस्थलमैंजिनकेमुक्ताहारोंकरकेशोभितहै १५ दिव्यक
हीश्रेष्ठरतनौंकरकेयुक्तमुद्रिकामुदरी [illegible] शोभितहै श्रीराघवहैदोहैभुजाजिनकीबालकरूपहैश्री

भानुकोटिप्रतीकाशंकिरीटेनविराजितम् रत्नग्रैवेयकेयूरंरत्नकुंडलमण्डितम् १४ रत्नकंकण
मंजीरकटिसूत्रैरलंकृतम् श्रीवत्सकौस्तुभोरस्कंमुक्ताहारोपशोभितम् १५ दिव्यरत्नसमायुक्तंमुद्रि
काभिरलंकृतम् राघवंद्विभुजंबालंराममीषत्स्मिताननं १६ तुलसीकुंदमन्दारपुष्पमाल्यैरलंकृ
तम् कर्पूरागरुकस्तूरीदिव्यगंधानुलेपनम् १७ योगशास्त्रेष्वभिरतंयोगेशंयोगदायकम् सदा
प भरतसौमित्रिशत्रुघ्नैःशोभितम् १८ विद्याधरसुराधीशैःसिद्धगंधर्वकिन्नरैः योगीन्द्रैर्नारदाद्यैश्च
स्तूयमानमहर्निशम् १९

रामकैसेहैमंदमंदहास्ययुक्तहैआननमुखजिनका १६ तुलसीअरुकुंदमंदारइत्यादिकपुष्पमाला
करकेशोभितहै करपूरऔरअगरुकस्तूरीइत्यादिकश्रेष्ठगंधौंकरकेलेपनयुक्तहै १७ योगशास्त्रौंमैंव्या
प्तहैयोगकेस्वामीहैयोगकेदेनेवालेहैं सर्वदाकालमैंभरतअरुलक्ष्मिनअरुशत्रुघ्न [illegible] स्पकहीसमीप
इनकरकेशोभितहै १८ विद्याधरअरुसुराधीशकहीदेवतौंकेस्वामीदेवतासिद्धगंधर्वकिंनरयोगीन्द्रना
रदादिकमुनिनकरकेदिनअरुरात्रिस्तूयमानकहीयेसबअस्तुतिकरजोरेकरतेखडेहैंश्रीरामके

३ विष्टंकहीसर्व॥विभुकही सर्वांतर्यामी ज्योतिःस्वप्रकाशस्वरूपं

आगे १९ विश्वामित्रवशिष्ठसेआदिजोमुनितिनकरकेशोभितहैं सनकादिश्रेष्ठअरुयोगिनकेसमूह
इनकरकेसेवितसेवायमानहै २० कैसे हैंश्रीरामरघुकुलमेंश्रेष्ठहैंवीरहैं॥धनुर्वविद्यामेंचतुरहैं मंग
लकेस्थानहैंदेवक्रीडनशीलश्रीरामहैंकमलकेसदृशनेत्रहैं २१ संपूरणशास्त्रोंकेअर्थजोतत्वतिसकेजा
हे ननेवालेहैं अरुआनंदरूपहैं हस्तकमलसुंदरहैंजिनके कौशल्यानंदनहैंश्रीराम धनुर्वाणधारीहैंहरिहैं
सो २२ मुनिवर्यमुनिनमेंश्रेष्ठनारदप्रसन्नमनहोकरके इसप्रकारकेजिनकोनिर्मलविभुव्यापकहैं ज्योति

विश्वामित्रवशिष्ठादिमुनिभिःपरिसेवितम् सनकादिमुनिश्रेष्ठैर्योगिवृन्दैश्चसेवितम् २० रामं
रघुवरंवीरंधनुर्वेदविशारदम् मङ्गलायतनंदेवंरामंराजीवलोचनम् २१ सर्वशास्त्रार्थतत्त्वज्ञमा
नन्दकरसुन्दरं कौशल्यानन्दनंरामंधनुर्बाणधरंहरिम् २२ एवंसंचिन्तयेद्विष्णुंयज्ज्योतिरमलंवि
भुं प्रहृष्टमानसोभूत्वामुनिवर्यःसनारदः २३ सर्वलोकहितार्थायतुष्टावरघुनन्दनं कृतांजलिपु
टोभूत्वाचिन्तयन्नद्भुतंहरिम् २४ यदेकंयत्परंनित्यंयदनन्तंचिदात्मकंयैकंव्यापकंलोकेतद्रूपंचिन्त दे
याम्यहम् २५ विज्ञानहेतुंविमलायताक्षंप्रज्ञानरूपंस्वसुखैकहेतुम्
तेज जिनकाऐसेश्रीरामकाचिंतवनकरतेभये २३ हाथजोरकरकेआश्चर्यमानहरिजोश्रीरामतिन
काचिंतवनकरतेहैं वेसंपूरणलोकजगतकेकल्याणवास्तेश्रीरघुनंदनकोअस्तुतिकरतेभये २४ जोए
श्रीराम कहैंजोपरउत्कृष्टहैनित्यहैजोअनंतहैं चैतन्यआत्मकहैंजोएकजगतमेंव्यापकहैं सोरूपमेंचिंतनक
रताहों २५ कैसेहैंश्रीरामजिनकोचिंतवनकरताहोंविज्ञानजोमोक्षतिसकेकारणहैं निर्मलहैंनेत्रविस्ता
रजिनके प्रज्ञानरूपहैंअपनेसुखकाएकहेतुहैं श्रीयुक्तश्रीरामचंद्रहैंहरिहैंआदिदेवहैं पराजो

ब्रह्मादिकां तिनसेपरात्परजोश्रीराम तिनकोनमस्कारकरताहौं सेवाकरताहौं २६ कविहैं पुराणपु
रुषहैं आगेसेसर्वदाकालस्थिरहैं योगिहैं ऐश्वर्ययुक्तहैं सूक्षमसेसूक्षमहैं सम्यकप्रकारअनंतहैं वीर्य
पराक्रमजिनका प्राणोंके स्वामीहैं ऐसेश्रीरामकोनारदजीदेखतेभये २७ श्रीनारदजीश्रीरामजीसे
कहतेभयेनारायणआपहोजगतकेस्वामीहौं आनंदरूपहोजगतकेपतिहो कविहो पुराणपुरुषहो
वाणीजोसरस्वतीताकेस्वामीहो दशरथात्मजकहीयेश्रीदशरथसुतहो २८ राजनकेराजाहो रघुवरहो
श्रीकौशल्याजीकेआनंदकोवर्द्धनकहीयेबढावनेवारेहौं तेजरूपहो वरणीयहो विश्वकेस्वामीहो रघुना

रा श्रीरामचंद्रंहरिमादिदेवंपरात्परंराममहंभजामि २६ कविंपुराणंपुरुषंपुरस्तात्सनातनंयोगम
महंभजामि योगिनमीशितारम् अणोरणीयांसमनंतवीर्यंप्राणेश्वरंराममसौददर्श २७ श्री
नारदउवाच नारायणंजगन्नाथमभिरामंजगत्पतिम् । कविंपुराणंवागीशंराममंदशरथात्मज
म् २८ राजराजंरघुवरंकौशल्यानन्दवर्द्धनम् भर्गंवरेण्यंविश्वेशंरघुनाथंजगद्गुरुम् २९ सत्यं
सत्यप्रियंश्रेष्ठंजानकीवल्लभंविभुं शौमित्रिपूर्वजंशांतंकामदंकमलेक्षणम् ३० आदित्यंरविमी
शानंघृणिंसूर्यमनामयम् आनन्दरूपिणंसौम्यंराघवंकरुणामयम् ३१

थहोजगतकेगुरूहो २९ सत्यहो सत्यप्रियहो श्रेष्ठहो श्रीजानकीजीकेवल्लभहो व्यापकहो शौमित्रि
कृ लक्ष्मणजीसेपूर्वप्रथमज्येष्ठहो शांतहो कामनाकेदेनेवालेहो कमलनेत्रहो ३० आदित्यहो रविहो
रुद्रहो सूर्यकीकिरणहो रागरहितहो आनंदरूपहो सुंदरहो राघवहो करुणादयामयहो ३१
परसुरामरूपहो तपमूर्तिहो परसजोफरसातिसकेधारणाकरनेवालेहो वाणीकेपतिहो वरदेने

वालेहो श्रीलक्ष्मीकेपतिहोगरुडवाहनहो ३२ श्रीशोभायुक्तशार्ङ्ग धनुषकेधारणकरनेवा
लेहो चिन्मय आनंद चैतन्य प्रधानसोई हैस्वरूपजिनका हलकेधारकरनेवालेतुमहीहो आदिअरुअं
तररहितहो विष्णुहोईश्वरहो वलरामहो कृपाकेसमुद्रहो ३३ श्रीलक्ष्मीकेवल्लभस्वामीहो कृपाकेनायक
हीस्वामीहो जगतमोहनहो अच्युतसदास्थिरहो मत्सकूर्मवाराहसे आदिरूपधारनकरनेवालेहो अव्यय
नाशरहितहो ३४ वासुदेवहो जगद्योनिकहीजगतकेउत्पतिस्थानहोअ श्रीरामहीअनादिकहीजगतकेअस
तिकरतेअरुनिधनंकहीनाशकरतेहो हरिहो गोविंदहो गोपतिधेनुपालकहो श्रीरामतुमहीहो विष्णु [illegible] व्या

यमदग्नितपोमूर्तिरामंपरशुधारिणम् वाक्पतिंवरदंवाच्यंश्रीपतिंपक्षिवाहनम् ३२ श्रीशार्ङ्ग
धारिणंरामंचिन्मयानंदविग्रहं हलधृग्विष्णुमीशानंबलरामंकृपानिधिम् ३३ श्रीवल्लभंकृपाना ल
थंजगन्मोहनमच्युतम् मत्स्यकूर्मवराहादिरूपधारिणमव्ययम् ३४ वासुदेवंजगद्योनिमनादिनि
धनंहरिम् गोविंदंगोपतिंविष्णुंगोपीजनमनोहरम् ३५ गोपालंगोपरिवारंगोपकन्यासमावृत
रा म् विद्युत्पुंजप्रतीकाशंरामंकृष्णंजगन्मयम् ३६ गोगोपिकासमाकीर्णंवेणुवादनतत्परम् कामरूपंक
लावंतंकामिनीकामदंविभुम् ३७ मन्मथंमथुरानाथंमाधवंमकरध्वजं श्रीधरंश्रीकरंश्रीशंश्रीनि
वासंपरात्परम्

पूहो गोपीजननेंकेमनहरनकरनेवालेहो ३५ धेनुपालकहो धेनुहैपरिवारहैजिसके गोपकन्याकरके
समावृतअच्छादितहो विजुरीकेसमूहसदृशहैतेजजिनका ऐसे श्रीरामअरुकृष्णएकहीस्यामलंपर्याको
त्वास्यामलोपिशोवितिमराःवारामंकृष्णमितिविख्यातंप्राक् श्रीरामस्यामसुंदरजगतमेंविख्यातहैं धेनुअ ई६
रुगोपीइनकरकेसमाकीर्णव्याप्तहो वेणुकेवजावनेमेंतत्पर अरुरासलीलाकेकामरूपहो इच्छादी श
नहैविग्रहस्वरूपजिनका षोडशकलावानहो कामिनीकोकामनादेनेवालेहो विभुव्याप्तहो ३७ मन्मथं

कामदेवरूप हो मथुरानाथं मधुपुरी के स्वामी शत्रुहनजी को राज्य दीन्ह है अरु मायाके पति हो मकरध्वज
प्रद्युम्नरूप हो श्रीलक्ष्मी के धारणकरनवाले हो अरु श्रीलक्ष्मी को करनेवाले है श्रीलक्ष्मी का स्वामी हो
श्री का निवासस्थान हो पर जो ब्रह्मादिक तिनसे पर हो ३८ भूत प्राणीयों का स्वामी हो भूमिकापति हो भद्र
कल्याणरूप हो विभूति जो अष्ट सिद्धि सोई है भूषण जिसका संपूर्ण दुःख के हरनेवाले है वीर है दुष्ट दानवों
का वैरी नाशकर्ता है ३९ श्रीशोभायुक्त नृसिंहरूप हैं महाबाहु बडी है भुजा जिसकी महांत बडे है दीप्तमा
न है तेज जिसका चैतन्य आनंद प्रधान है नित्य है प्रणवरूप है ज्योतिरूप है ४० आदित्यमंडलमे प्राप्त है निश्च

भूतेशं भूपतिं भद्रं विभूतिभूतिभूषणं सर्वदुःखहरं वीरं दुष्टदानववैरिणम् ३९ श्रीनृसिंहं महाबाहुम
च्युतं दीप्ततेजसं चिदानंदमयं नित्यं प्रणवं ज्योतिरूपिणम् ४० आदित्यमंडलगतं निश्चितार्थस्वरूपिणम्
भक्तप्रियं पद्मनेत्रं भक्तानामीप्सितप्रदम् ४१ कौशलेयं कलामूर्तिं काकुत्स्थं कमलाप्रियं सिंहासने समा
सीनं नित्यव्रतमकल्मषम् ४२ विश्वामित्रप्रियं दांतं स्वदारनियतव्रतम् यज्ञेशं यज्ञपुरुषं यज्ञपालन
तत्परम् ४३ सत्यसंधं जितक्रोधं शरणागतवत्सलम् सर्वक्लेशापहरणं विभीषणवरप्रदम् ४४

यक्रिया जो अर्थ सोई है स्वरूप जिसका भक्ति है प्रिय जिसको कमलनेत्र हैं भक्तों का वांछित फल देनेवाले
है श्रीराम है ४१ कौशल्यासुत हैं कलामूर्ति काकुत्स्थ के वंश मैं जन्म जिनका कमला है प्रिय जिन श्रीराम के
ति प्रियाजी सहित श्रीतमश्री सीताराम सिंहासन में बैठे हैं नित्यव्रत हैं पापरहित है ४२ विश्वामित्र है प्रिय
नियतव्रत जिसके अरु जितेंद्रिय है स्वदारे निजपत्नीव्रत है जिन श्रीराम का यज्ञ के स्वामी है यज्ञपुरुष है यज्ञके पालन
में तत्पर हैं ४३ सत्यसंध है क्रोध जीते हैं शरणागतवत्सल है संपूर्ण क्लेश को अपहरण नाश करनेवाले श्रीराम हैं

५

फेरकैसेरामहै विभीषणकोवरदेनेवालेहैं ४४ फेरकैसेरामहै दशग्रीवरावणकेनाशकरनेवालेहैं पुनः
कैसेश्रीरामहै रुद्ररूपहैं केशवहैं जलमेंशयनकरनेवालेहैं केशिदैत्यकोमर्दनकरनवालेहैं वालिकोप्रमथ
वीरहै ३ ननाशकरनेवालेहैं सुग्रीवकोवांछिताराज्यदेनेवालेहैं ४५ पुनःकैसेहैंश्रीराम नरअरुवानर देवताइनकर
केसेवितहैहनुमानकोप्रियहैं शुद्धसत्वरूपहै सूक्ष्महै परउत्कृष्टहै शांतहै जितेंद्रियहै तारकमंत्रकावाच्य
हैं ब्रह्मरूपहै ४६ संपूर्णभूतप्राणिनकाजोआत्मामन तिसमेंस्थितहै संपूर्णजगतकाआधारहै सर्वदा

श्री दशग्रीवहरंरुद्रं केशवं केशिमर्दनम् वालिप्रमथनंवीरं सुग्रीवेप्सितराज्यदम् ४५ नरवानरदेवैश्च
सेवितंहनुमतप्रियम् शुद्धंसूक्ष्मंपरंशांतंतारकंब्रह्मरूपिणम् ४६ सर्वभूतात्मभूतस्थं सर्वाधारंसना
तनम् सर्वकारणकर्त्तारंनिदानंप्रकृतेःपरम् ४७ निरामयंनिराभाषंनिरवद्यंनिरंजनम् नित्यानंदंनि
राकारंमद्वैतंतमसःपरम् ४८ परात्परतरंतत्वंसत्यानंदंचिदात्मकम् मनसावचसानित्यंप्रणमामि
रघूत्तमम् ४९ सूर्यमंडलमध्यस्थंरामंसीतासमन्वितम् नमामिपुंडरीकाक्षममेयंगुरुतत्परम् ५०

स्थिरहै संपूर्णकाकारणहै कर्त्ताहै आदिकारणप्रकृतिमायासेपरेहै ४७ पुनःकैसेश्रीरामहै निरामयरोग
रहितहैं आभासरहितहैं निरवद्यपापीउरहितहैं निरंजनउपाधिरहितहैं नित्यआनंदरूपहैं निराकारमायाकेआ
काररहितहै अमत्रज्ञानसेपरेहै ४८ पुनःकैसेश्रीरामहै परजोश्रमदादिकजीवतिनसेपरजोब्रह्मादिक
तिनसेपरहैं तत्वज्ञानजिसकासत्यानंदरूपहै चैतन्यआत्मकहै नित्यहै रघुकुलमेंउत्तमश्रेष्ठश्रीराम तिन
कोमनकरकेवचनकरकेमैंप्रणामकरताहौं ४९ सूर्यमंडलकेमध्यमेंश्रीसीतासहितरामस्थितहैं कम जो
लनेत्रहैं आमयइयत्ताज्ञामरहितहै गुरुकेसेवामेंतत्परहै ऐसेश्रीरामकोमैंप्रणामकरताहौं ५० ५

फेर कैसे राम हैं विभीषण को वर देने वाले हैं ४४ फेर कैसे राम हैं दशग्रीव रावण के नाश करने वाले हैं पुनः
कैसे श्रीराम हैं रुद्र रूप हैं केशव हैं जल में शयन करने वाले हैं केशि दैत्य को मर्दन करन वाले हैं वालि को प्रमथ
वीर है ३ न नाश करने वाले हैं सुग्रीव को वांछित राज्य देने वाले हैं ४५ पुनः कैसे हैं श्रीराम नर अरु वानर देवता इनकर
के सेवित हैं हनुमान को प्रिय हैं शुद्ध सत्व रूप हैं सूक्ष्म हैं पर उत्कृष्ट हैं शांत हैं जितेंद्रिय हैं तारक मंत्र का वाच्य
हैं ब्रह्मरूप हैं ४६ संपूर्ण भूत प्राणिन का जो आत्मा मन तिस में स्थित हैं संपूर्ण जगत का आधार हैं सर्वदा

शा दशग्रीवहरं रुद्रं केशवं केशिमर्दनम् वालिप्रमथनं वीरं सुग्रीवेप्सितराज्यदम् ४५ नरवानरदेवैश्च
सेवितं हनुमतप्रियम् शुद्धं सूक्ष्मं परं शांतं तारकं ब्रह्मरूपिणम् ४६ सर्वभूतात्मभूतस्थं सर्वाधारं सना
तनम् सर्वकारणकर्तारं निदानं प्रकृतेः परम् ४७ निरामयं निराभासं निरवद्यं निरंजनम् नित्यानंदं नि
राकारं मद्वैतं तमसः परम् ४८ परात्परतरं तत्वं सत्यानन्दं चिदात्मकं मनसा वचसा नित्यं प्रणमामि
रघूत्तमम् ४९ सूर्यमंडलमध्यस्थं रामं सीतासमन्वितम् नमामि पुण्डरीकाक्षममेयं गुरुतत्परम् ५०

स्थिर हैं संपूर्ण का कारण हैं कर्ता हैं आदि कारण प्रकृति माया से परे हैं ४७ पुनः कैसे श्रीराम हैं निरामय राग
रहित हैं आभास रहित हैं निरवद्य पापी और हित हैं निरंजन उपाधि रहित हैं नित्य आनंद रूप हैं निराकार माया के आ
कार रहित हैं तमस अज्ञान से परे हैं ४८ पुनः कैसे श्रीराम हैं पर जो अस्मदादिक जीव तिनसे पर जो ब्रह्मादिक
तिनसे पर हैं तत्व ज्ञान जिसका सत्यानंद रूप हैं चैतन्य आत्मक हैं नित्य हैं रघुकुल में उत्तम श्रेष्ठ श्रीराम तिन जो
को मन कर के वचन कर के मैं प्रणाम करता हौं ४९ सूर्य मंडल के मध्य में श्री सीता सहित राम स्थित हैं कम
ल नेत्र हैं आमय इयत्ता जामर रहित हैं गुरु के सेवा में तत्पर हैं ऐसे श्रीराम को मैं प्रणाम करता हौं ५० ५

राम राम

पुनःकैसेहैंश्रीरामतिन्नकोनमस्कारकरतहै वासुदेवेंकोनमस्कारहोयतेजोंकेपतिंकोनमस्कारहोय
श्रीरामदेवकोनमस्कारहोयजगतकेजोआनंदरूपरामकोनमस्कारहोय ५१ वेदांतमेंहैनिष्ठाजिसकी
तेनिष्ठारूपरामकोनमस्कारहोय योगीरूपरामकोनमस्कारहोयब्रह्मवादीरूपरामकोनमस्कारहोयमाया
प्रधानउपाधिदूरकरनेवालेरामकोनमस्कारहोयशरणागतजनोंकरकेसेवितहैंश्रीराम ५२ श्रीरघुनंद
नकोमैंस्तुतिव्रसाकरतहै महेशानशिवरूपहैं चंडजोरुद्रतिसकाकोदंडधनुषखंडनकरनेवालेहैंश्रीजा

नमोस्तुवासुदेवायज्योतिषांपतयेनमः नमोस्तुरामदेवायजगदानन्दरूपिणे ५१ नमोवेदान्तनि
ष्ठाययोगिनेब्रह्मवादिने मायामयनिरस्तायप्रपन्नजनसेविने ५२ वन्दामहेमहेशानंचंडको
दंडखंडनम् जानकीहृदयानन्दंचंदनंरघुनन्दनम् ५३ उत्फुल्लामलकोमलोत्पलदलश्यामायरा
मायनः कामायप्रमदामनोहरगुणग्रामायरामात्मने योगारूढमुनीन्द्रमानससरोहंसायसं
सारविध्वंशायस्फुरदोजसेरघुकुलोत्तंसायपुंसेनमः ५४ भवोद्भवंवेदविदोवरिष्ठमादित्यचंद्रा

पुनःश्रीरा
रामकैसेहैं
२

नकीजीकेहृदयकोआनंददेनेवालेमैंचंदनसुखरूपहैं ५३ विकसितअरुनिर्मलजोकमलदलशदृ
शश्यामरूपतिनरामकोमैंनमस्कारकरतहौं अरुकामरूपश्रीरामकोमैंनमस्कारकरतहौं अरुप्रमदास्त्री
केमनकेहरनेवालेश्रीगुणसमूहहैजिसमेंऐसाजोआत्मारूपश्रीरामकोनमस्कारकरतहौं योगमेंआ
रूढअरुस्थितिजोश्रेष्ठमुनितिसकाजोमनरूपसरोवरतिसमैंजोहंसरूपश्रीरामकोनमस्कारकरतहौं
संसारकाजोविध्वंसनासकरनेवालेश्रीरामकोनमस्कार अरुरघुकुलमैंजोउत्तमशिरोभूषणऐसेजोपु
रुषमनुष्यरूपीश्रीरामकोनमस्कारकरतहौं ५४ संसारकाउद्भवउत्पत्तिस्थानहैवेदकेजोवेताजानने

६८

जोमाया
कीउपाधि
तिसते ६

वालेतिनमैंश्रेष्ठहैंआदित्यश्रोचंद्रमाअरुअनिलकहीवायुइनकेसदृशहैप्रभावजिनकासंपूर्णाज
गतकाआत्माहैंसंपूर्णाजगतमैंगतप्राप्तहैस्वरूपजिनकाअैसेजोतमअज्ञानसेपरेजोश्रीरामतिनु
कोमैंनमस्कारकरताहों ५५ निरंजनउपाधिरहितहैंप्रतिमारहितहैंचेष्टारहितहैंआश्रयरहितहैं
पापरहितहैंप्रपंचरहितहैंनित्यहैंध्रुवअचलहैंविषयसेरहितहैंस्वरूपजिनकाअैसेश्रीरामकोनिरंतरमैं
सेवाकरताहों ५६ भवसंसाररूपजोसमुद्रतिसमैंपोतनौकाहैभरतकेअग्रजकहीप्रथमहैजन्मजिन

निलसुप्रभावं सर्वात्मकंसर्वगतंस्वरूपंनमामिरामंतमसःपरस्तात् ५५ निरंजनंनिष्प्रतिमंनिरी
हंनिराश्रयंनिष्कलमप्रपंचम् नित्यंध्रुवंनिर्विषयस्वरूपंनिरंतरंराममहंभजामि ५६ भवा
ब्धिपोतंभरताग्रजंतंभक्तिप्रियंभानुकुलप्रदीपम् भूतत्रिनाथंभुवनाधिपत्यंभजामिरामंभवरोग
वैद्यम् ५७ सर्वाधिपत्यंसमरंगधीरंसत्यंचिदानन्दमयस्वरूपं सत्यंशिवंशांतिमयंशरण्यंसनात
नंराममहंभजामि ५८ कार्य्यक्रियाकारणमप्रमेयंकविंपुराणंकमलायताक्षं कुमारवेद्यंकरु
णामयंतं कल्पद्रुमंराममहंभजामि ५९

काभक्तिप्रियहैजिनकोभानुकुलमैंप्रदीपकहीभानुकुलकेप्रकासकरनेवालेहैंभूतजोपृथ्वीसेआदि
तीनिलोककेनाथंकहीस्वामीहैभुवनजोचतुरदशतिनकाअधिपत्यरक्षकहैंअैसाजोभवसंसाररूपरो
गजन्ममरणतिकाछुडावनेवालेवैद्यजोश्रीरामतिनकोमैंसेवाकरताहों ५७ संपूर्णाजगतकाअधिपत्य
हैसमरेधीरधैर्यवानहैंसत्यहैंचैतन्यहैंआनंदप्रधानरूपजिसकासत्यहैकल्याणरूपहैशांतिप्रधानहैं
शरणमैंजोआवेतिनकोअभयदायकहैंसदास्थिरहैंअैसेजोश्रीरामतिनकोमैंसेवाकरताहों ५८ कार्य्य
रूक्रियाइनकेकारणकर्ताहैंअप्रमेयमरजादारहितहैंकविहैंपुराणपुरुषहैंकमलनेत्रहैंकुमारजा

६८

ननेयोग्यहैंकरुणाकाआकरखानहैकल्पवृक्षहैं एतादृशजोश्रीरामतिनकोमैंसेवाकरताहों ५९ त्रैलो
कीकास्वामीहैंकमलनेत्रहैंदयाकानिधीसमुद्रहैं द्वंदजोरागद्वेषदुःखइनकाविनाशहेतुकारणहैंमहा
वलवानहैंवेदोंकानिधिहैंदेवतोंकाईश्वरस्वामीहैंसदास्थिरहैंऐसेजोश्रीरामतिनकोमैसेवाकरता
हूं ६० वेदांतकरिकेवेद्यजाननेयोग्यहैंकविहैं इसितारसिद्धताकेदेनेवालेअनादिअरुमध्यअरुअं
तइनकरकेअचिंत्यजिसकाचिंतवननहींहोसकताहैंआद्यहैंअगोचरइंद्रियविषयसेरहितहैंनिर्मल

त्रैलोक्यनाथंसरसीरुहाक्षंदयानिधिंद्वंद्वविनाशहेतुं महावलंवेदनिधिंसुरेशंसनातनंराममहं
भजामि ६० वेदान्तवेद्यंकविमीशितारमनादिमध्यान्तमचिंत्यमाद्यं अगोचरंनिर्मलमेकरूपनमा
मिरामंतमसःपरस्तात् ६१ अशेषवेदात्मकमादिसंज्ञमजंहरिंविष्णुमनंतमाद्यं अपारसंवित्सुखमे
करूपपरात्परंराममहंभजामि ६२ तत्वस्वरूपंपुरुषंपुराणंस्वतेजसापूरितविश्वमेकं राजाधिरा
जंरविमंडलस्थंविश्वेश्वरंराममहंभजामि ६३ लोभिरामंरघुवंशनाथंहरिंचिदानन्द

का

एकरूपहैंतमअज्ञानसेपरजोश्रीरामतिनकोमैंनमस्कारकरताहों ६१ संपूर्णवेदोंकाआत्माहैंआदिहैंसं
ज्ञाजिसकीजन्मरहितहैंहरिभक्तोंकेपापोंकानाशकरनेवालेहैंविष्णुव्यापकहैंअनंतहैंआद्यहैंनहींहैंपा
रजिकाऐसाज्ञानरूपहैंसुखस्वरूपहैपरजोब्रह्मादिकतिनसेपरहैंऐसेजोश्रीरामतिनकोमैसेवाकरता
हों ६२ तत्वज्ञानस्वरूपहैंपुरुषहैंपुराणपुरुषहैंअपनेतेजकरकेपूर्णकरीहैविश्वजिसनेएकहैरा
जोंकाराजाहैंरविमंडलमेस्थितहैविश्वकाईश्वरस्वामीहैंऐसेजोश्रीरामतिनकोमैंसेवाकरताहों ६३
लोकोंकेस्वामीअभिरामसुखरूपहैंरघुवंशकुलकेस्वामीहैहरिहैंचैतन्यआनंदअध्यानहैंमु
कुंदमुक्तिकादेनेवालेहैंपुराणविद्याकाअधिपतिहैंअधिघाताहैंकविनमेंइंद्रश्रेष्ठहैंतमअज्ञान

एक

रा

वि

सेपरजोश्रीरामतिनकोमैंनमस्कारकरतहौं ६४ योगिनमेंजोशतसमूहतिनकरकेसेवायमानहैं नाराय
णहैं निर्मलहैं आदिदेवहैं जगतकाजोएकस्वामीहै अरुतमअज्ञानसेपरेहैं आदित्यकेतुल्यहैं रूपजिन
कातिनश्रीरामकोमैंनमस्कारकरताहौं ६५ विभूतिऐश्वर्यकादाताहैं विश्वजोजगततिसकेउत्पन्नकर
य नेवालेहैं शोभायमानहैराजोंमेंइंद्रहैं ईशमहादेवरूपहैं रघुवंशकोनाथस्वामीहै अचिंत्यचिंतवनरहित
हैं अव्यक्तअप्रगटगुप्तहै अनंतहैं मूर्त्तिजिसकी ज्योतिप्रधानजोश्रीरामतिनकोमैंसेवाकरताहूं ६६

मयं मुकुंदम् अशेषविद्याधिपतिंकविन्द्रंनमामिरामंतमसःपरस्तात् ६४ योगीन्द्रसंघैःशतसे
व्यमानं नारायणंनिर्मलमादिदेवंनतोस्मिनित्यंजगदेकनाथमादित्यवर्णंतमसःपरस्तात् ६५
विभूतिदंविश्वसृजंविराजंराजेन्द्रमीशंरघुवंशनाथम् अचिन्त्यमव्यक्तमनंतमूर्त्तिंज्योतिर्मयंरा
ममहंभजामि ६६ अशेषसंसारविकारहीनमादित्यसंपूर्णसुखाभिरामं समस्तसाक्षीतमसः
नि परस्तात्नारायणंविष्णुमहंभजामि ६७ मुनीन्द्रगुह्यंपरिपूर्णमेकंकलानिधिंकल्मषनाशहेतुं प
रात्परंयत्परमंपवित्रंनमामिरामंमहतोमहांतम् ६८ ब्रह्माविष्णुश्चरुद्रश्चदेवेन्द्रोदेवतास्तथा

संपूर्णजोसंसारकेविकारकामक्रोधसेआदितिनसेहीनरहितहैं आदित्यकेसदृशसंपूर्णजगतको
सुखकाअभिरामरमणहैं समस्तजगतकासाक्षीहैं तमअज्ञानसेपरेंनारायणहैं विष्णुजगतमेंव्याप्तहैं हैं
ऐसेश्रीरामकोमैंसेवाकरतहौं ६७ मुनीन्द्रोंकोगुह्यगोप्यहै परिपूर्णहैं एकहैं कलानिधिसमुद्रहैं
कल्मषपापकानाशहेतुकारणहैं परजोजीवतिनसेपरजोब्रह्मादिकसेपरहै परमउत्कृष्टसर्वोत्तमहै प
वित्रहैं ऐसेजोमहातवड़ेसेवड़ासंपूर्णसेश्रेष्ठश्रीरामतिनकोमैंनमस्कारकरतहौं ६८ हेरघुनंदनतु
मब्रह्माहौंविष्णुहौंरुद्रहौंदेवेंद्रदेवतनकेराजाहौ

सेपरजोश्रीरामतिनकोमैंनमस्कारकरतहौं ६४ योगिनमेंजोशतसमूहतिनकरकेसेवायमानहैं नाराय
णहैंनिर्मलहैंआदिदेवहैंजगतकाजोएकस्वामीहैअरुतमअज्ञानसेपरहैंआदित्यकेतुल्यहैंरूपजिन
कातिनश्रीरामकोमैंनमस्कारकरताहौं ६५ विभूतिऐश्वर्यकादाताहैं विश्वजोजगततिसकेउत्पन्नकर
य नेवालेहैं शोभामानहैराजोंमेंइंद्रहैं ईशमहादेवरूपहैरघुवंशकोनाथस्वामीहैअचिंत्यचिंतवनरहित
हैअव्यक्तअप्रगटगुप्तहैअनंतहैमूर्तिजिसकीज्योतिप्रधानजोश्रीरामतिनकोमैंसेवाकरताहूं ६६

मयंमुकुंदम अशेषविद्याधिपतिंकवीन्द्रंनमामिरामंतमसःपरस्तात् ६४ योगीन्द्रसंघैःशतसे
व्यमानं नारायणंनिर्मलमादिदेवंनतोस्मिनित्यंजगदेकनाथमादित्यवर्णंतमसःपरस्तात् ६५
विभूतिदंविश्वसृजंविराजंराजेन्द्रमीशंरघुवंशनाथम् अचिन्त्यमव्यक्तमनंतमूर्तिंज्योतिर्मयंरा
ममहंभजामि ६६ अशेषसंसारविकाररहीनमादित्यसंपूर्णसुखाभिरामं समस्तसाक्षीतमसः
नि परस्तात्नारायणंविष्णुमहंभजामि ६७ मुनीन्द्रगुह्यंपरिपूर्णमेकंकलौंधिंकल्मषनाशहेतुं प
रात्परंयत्परमंपवित्रंनमामिरामंमहतोमहांतम् ६८ ब्रह्माविष्णुश्चरुद्रश्चदेवेन्द्रोदेवतास्तथा

संपूरणाजोसंसारकेविकारकामक्रोधसेआदितिनसेहीनरहितहैआदित्यकेसदृशसंपूरणजगतको
सुखकाअभिरामणहैसमस्तजगतकासाक्षीहैंतमअज्ञानसेपरनारायणहैंविष्णुजगतमेंव्याप्तहैं
ऐसेश्रीरामकोमैंसेवाकरतहौं ६७ मुनीन्द्रोंकोगुह्यगोप्यहैपरिपूर्णहैंएकहैंकलानिधिसमुद्रहैं
कल्मषकानाशहेतुकारणहैपरजोजीवतिनसेपरजोब्रह्मादिकसेपरहैपरमउत्कृष्टसर्वोत्तमहैप
वित्रहैऐसेजोमहातत्वउसेबडासंपूर्णसेश्रेष्ठश्रीरामतिनकोमैंनमस्कारकरतहौं ६८ हेरघुनंदनतु

मब्रह्माहैं विष्णुहैं रुद्रहैं देवेंद्रदेवतनकेराजाहै

हे रघुपुंगव श्रेष्ठ हो सनकादिक मुनि सो तुम हौं आठो वसु हो काल हौ एकादश रुद्र हौं ७२ ३
तथा देवता हैं आदित्य से आदि जो नव ग्रह सो तुम हौं ६९ तपस्वी हौं ऋषि हो सिद्ध हैं साध्य हौं मरुत पवन
हौं विप्र हैं वेद हौं तथा यज्ञ हौं पुराण हो धर्म संहिता हौ धर्मशास्त्र हैं ७० हे श्रीराम चारो वर्ण तुम हौं चा
धर्म रो आश्रम हौं तथा धर्म हौं तथा वर्ण हौ यक्ष हौ राक्षस हौ गंधर्व हौ दिग्पाल हौ दिग्गज हौ तुम ७१
हे श्रीरघुनंदन तारागण तुम हौं दशो दिशा हो सातो द्वीप हौ समुद्र हौं नग पर्वत हौं तथा नदी हौ द्रु
म वृक्ष हो ७३ हे श्रीरघुनायक स्थावर वृक्ष पर्वतादि रूप हौं जंगम मनुष्य पशु पक्षी इत्यादिक रू
प हौ देव तिर्यग देवक्षरू पशु पक्षी सो तुम हौं और मनुष्यों का और दानवों का रूप हो ७४ हे श्रीरघुव

आदित्यादिग्रहाश्चैव त्वमेव रघुनन्दन ६९ तापसा ऋषयः सिद्धाः साध्याश्च मरुतस्तथा विप्रा
वेदास्तथा यज्ञाः पुराणां धर्मसंहिताः ७० वर्णाश्रमास्तथा धर्मा वर्णधर्मास्तथैव च यक्षराक्षस
गंधर्वा दिक्पाला दिग्गजादिभिः ७१ सनकादि मुनिश्रेष्ठास्त्वमेव रघुपुंगव वसवोऽष्टौ त्रयः का
ला रुद्रा एकादशाः स्मृताः ७२ तारका दश दिक्चैव त्वमेव रघुनन्दन सप्त द्वीपाः समुद्राश्च नगा
नद्यस्तथा द्रुमाः ७३ स्थावरा जंगमाश्चैव त्वमेव रघुनायक देवतिर्यग्मनुष्याणां दानवानां त
थैव च ७४ माता पिता तथा भ्राता त्वमेव रघुवल्लभ सर्वेषां त्वं परं ब्रह्म त्वन्मयं सर्वमेव ही ७५
त्वमक्षरं परं ज्योतिस्त्वमेव पुरुषोत्तम त्वमेव तारकं ब्रह्म त्वत्तोऽन्यन्नैव किंचन ७६ [illegible]

ल्लभ संपूर्ण प्राणीयों का माता और पिता तथा भ्राता तुम हौ परं ब्रह्म हौ तुम्हारा रूप ये सब जगत त्वन्म
म य हैं है हे पुरुषोत्तम त्वं अक्षर नाश रहित हो परम उत्कृष्ट ज्योति हौ तुम ही तारक हौ ब्रह्म हौ तुम से
पति परे और कुछ नहीं है ७६ जगत कारक जो श्रीराम तिनको मैं प्रणाम करता हूं कमलके सदृश वि

नकेनेत्रहैशांतहैंसर्वगतप्राप्तहैंसूक्ष्महैंपरंब्रह्महैंसदास्थिरहैं ७७ श्रीवेदव्यासकहतेहैंयुधिष्ठिरको
तदनंतरप्रसन्नजोश्रीराममुनिपुंगवनारदकोकहतेहैं हेमुनिशार्दूलमैंप्रसन्नहौंश्रेष्ठवरकोअंगीकारक
यदि रो ७८ श्रीनारदजीकहतेहैं हेसर्वज्ञहेश्रीरामकरुणाकेनिधिजोतुमप्रसन्नभयहौंतुमारीमूर्तिकेदर्शि
नकरकेमेराजोमनवांछितसोकृतार्थभया ७९ हेपुरुषोत्तममैंधन्यहौंमैकृतकृत्यहौंमैंपुण्यपवित्रहौं
इसीकालविषेमेराजन्मसफलहैंमेराजीवनसफलहै ८० इसीकालविषेमेराज्ञानसफलहैइसीकाल

शांतंसर्वगतंसूक्ष्मंपरंब्रह्मसनातनंराजीवलोचनंरामंप्रणमामिजगत्पतिम् ७७ श्रीवेदव्यासउवा
च ततःप्रसन्नःश्रीरामःप्रोवाचमुनिपुंगवम् तुष्टोस्मिमुनिशार्दूलवृणीष्ववरमुत्तमं ७८ श्रीना
रदउवाच यदितुष्टोसिसर्वज्ञश्रीरामकरुणानिधे त्वन्मूर्तिदर्शनेनैवकृतार्थोहंममेप्सितम् ७९
कृ धन्योहंकृतकृत्योहंपुण्योहंपुरुषोत्तमम् अद्यमेसफलंजन्मजीवितंसफलंचमे ८० अद्यमेसफ
सफलं लंज्ञानंअद्यमेतपः अद्यमेसफलंयज्ञस्त्वत्पादाम्भोजदर्शनात् ८१ अद्यमेसफलंसर्वंत्वन्नाम
स्मरणातथा त्वत्पादाम्भोरुहद्वंद्वेसद्भक्तिंदेहिराघव ८२ ततःपरमसंप्रीतोरामःप्राहसनारद श्री
रामउवाच मुनिवर्य्य महाभागमुनित्विष्टंददामितेयत्त्वयाचिंतितंसर्वंमनसातद्भविष्यति ८३

विषेमेरातपसफलहैइसीकालविषेमेरायज्ञसफलहैंतुमारेचरणकमलकेदर्शनसे ८१ इसीका
लविषेमेरासंपूर्णसफलहैतथातुमानामस्मरण हेराघवतुमारेचरणकमलजोहैदोनोंति
नकेविषेमेरामनरहैश्रेष्ठभक्तिकोदेवो ८२ तदनंतरपरमप्रसन्नजोसोश्रीरामनारदकोकहतेहैं
हेमुनिवर्यहेमहाभागवालेहेमुनितेराजोइष्टहैसोमैंदेताहौंजोतैंनेमनकरिकेसंपूर्णवांछित
कियाहैसोहोगा ८३

२७१

राम श्रीस

श्रीनारदजीकहतेहैं हेश्रीरघुनाथजीमहराजवरवहीमागताहौंतुमारेचरणकमलकीभक्तिनिरंत
रमेरेकोहोय हेनाथयहप्रियवर मैंइछाकरताहौंवारवार मैंतुमकोयहीमागताहौं ८४ श्रीवेदव्यास
श्रीसीता युधिष्ठिरकोकहतेहैं ऐसेअस्तुतिकियेतवश्रीरामतिननारदकोदूसरावरदेतेभयेकैसेहैं श्रीरामवडेतेस्वी
रामराम हैंसच्चिदानंदरूपहैं विररामकहीमौनहोतेभये ८५ इसप्रकारकरकेश्रीरघुनाथजीकोजोउत्तमअस्त
वराजसोसंपूरणसौभाग्यऔरसंपतिऐश्वर्यदायकहै शुभअशेषभक्तिदायकहै ८६ ब्रह्मपत्रनारदने

श्रीसी श्रीनारदउवाच वरंनयाचेरघुनाथयुष्मत्पादाब्जभक्तिःसततंममास्तुइदंप्रियंनाथवरंप्रयच्छपु
ताराम नःपुनस्त्वामिदमेवयाचे ८४ श्रीवेदव्यासउवाच इत्येवमीडितोरामःप्रादात्तस्मैवरांतरम्
श्रीसीता विरराममहातेजाःसच्चिदानन्दविग्रहं ८५ अद्वैतममलंज्ञानंतन्नामस्मरणातथा अन्तर्ध्या
६ नजगामाथपुरतस्तस्यराघवः ८६ इतिश्रीरघुनाथस्यस्तवराजमनुत्तमं सर्वसौभाग्यसंप
५ त्तिदायकंमुक्तिदंशुभं ८७ कथितंब्रह्मपुत्रेणवेदानांसारमुत्तमम् गुह्याद्गुह्यतमंदिव्यंतवस्नेहा
त्प्रकीर्तितम् ८८ यःपठेच्छृणुयाद्वापित्रिसंध्यंश्रद्धयान्वितः ब्रह्महत्यादिपापानितत्समानि
बहूनिच ८९ स्वर्णस्तेयीसुरापानिगुरुतल्पायुतानिच गोवधाद्युपपापानिअनृतात्संभवानिच ९०

कहाहैं वेदोंकाउत्तमअरुसारसोगुह्यसेगुह्यगोप्यहैं दिव्यहैं व्यासजीकहतेहैं युधिष्ठिरकोतेरेस्नेहप्रे
मसेमैंकहाहै ८८ श्रद्धाकरकेतीनोंकालमैंपठनकरैअथवाश्रवणाकरैसोब्रह्महत्यासेआदिजोपाप
तिसकेतुल्यजोबहुतसेऔरपाप ८९ स्वर्णकीचुरावनेवालेसुरापानकरनेवालेगुरुकीशय्यापर
पावधरनेवालेइनकेजोपापऔरगोहत्यादिकजोउपपापअनृत
ऽकहनेसे[illegible]भयपापजोपाप ९०

रामजीलंकाकिविजयकरिरावणादिराक्षसोंकावधकरिकेश्रीअयोध्याजाआयतहोकाविशेषध्यानप्रपतिकरतोहै वैदेहीसहितंश्रीराम
६ भजेइत्यन्वयः किंभूतंरामंसुरद्रुमतलेकल्पवृक्षकेनीचेहैमेमहामंडपेस्वर्णकेमंडपमध्येमणिमयंमणिजटितपुष्पककाआसनश्रेष्ठ

मनअरुवाणीकर्मोकरकेएकत्रभयेजोपापतिससंपूरणपापोंकरिकेछूट[illegible]ताहैशतसहस्रकल्पकर
केहैंउद्भवजिनपापोंकातिनसेछूटताहै ६१ श्रीरामस्मरणमात्रकरकेतिसीक्षणमेंध्रुवनिश्चयकर
केनाशकोप्राप्तहोतेहैं एहसत्यहै एहसत्यहै एहजोकहासत्यहैं ६२ श्रीरामसत्यकरकेपरब्रह्महैंश्री
राममेंऔरकुछनहीहैंतिसकारणासेएहजगतश्रीरामकारूपहैएहसत्यहैंसत्यहै ६३ सूतशौनककको

तिसविषेवीरा
सनमेंस्थितहैं
श्रीरामजी
कैसेहैंजिन
रामकोभजे
तेहैंश्यामल
इंद्रनीलमणि
केसदृशप्रभा
६५ २

सर्वैःप्रमुच्यतेपापैःकल्पायुतशतोद्भवैः मानसंवाचिकंपापंकर्मणासमुपार्जितम् ६१ श्रीरा
मस्मरणेनैवतत्क्षणान्नश्यतिध्रुवम् इदंसत्यमिदंसत्यंसत्यमेतदिहोच्यते ६२ रामःसत्यंपरं
ब्रह्मरामात्किंचिन्नविद्यते तस्माद्रामस्यरूपोयंसत्यंसत्यमिदंजगत् ६३ सूतउवाच श्रीराम
चन्द्ररघुपुंगवराजवर्यराजेन्द्ररामरघुनायकराघवेशराजाधिराजरघुनन्दनरामभद्रदा
सोहमद्यभवतःशरणागतोस्मि ६४ वैदेहीसहितंसुरद्रुमतलेहैमेमहामंडपेमध्येपुष्पक
मासनेमणिमयवीरासनेसंस्थितं ६५ अग्रेवाचयतिप्रभंजनसुतेतत्वंचसद्भिःपरंव्याख्या
तंभरतादिभिःपरिवृतंरामंभजेश्यामलम् ६६

व

पुंगव१ कहतेभयेहेश्रीरामचंद्रहेरघुकुलमेंश्रेष्ठहेराजेंद्रहेरामहेरघुनायकहेराघवेशहेरघुनंदनहेरा
व्याख्या मभद्रकल्याणदायकइसीकालविषेमेंतुम्हारादासहौंशरणागतहौं ६४ आगेवाचयतिप्र
रिहेहैं भंजनसुतहनुमानऔरश्रेष्ठमुनिनकरकेसहितहै श्रीरामकेआगेप्रभंजनसुतेहनुमानसद्भिःसहतत्वं
तसआ वाचयतिकीर्तयतितत्वंचचिदचिदीश्वरस्वश्रीरामस्वरूपगुणयाथात्म्यंयथार्थसच्चिदानंदस्वरूपरूपकरूपाकि
गोसोमि सत्यसंधस्नेहअसरूपकेसमुद्रःअरूपरपरमरसिकसर्वेश्वरराजाधिराजदाशरथीइत्यादिरूपकोइत्थंव्याख्यातंवेदा
गत्रघु दिभिःश्लाघितंवर्णनकरिकेश्लाघाबडाईकरतेहैं प्रसिद्धवामुनिभिःधान्विकःपाठःछंदभंगकेअर्थदोषायतदत्तं रा ६
करिकेप वणंसपरिवारंनिहत्यविभीषणकोलंकाकाराजदेकेअग्निकरिकेपारखाश्रीजानकीजीकोलेके[illegible]गनहराकरिकेपरिवार
हैं३ सुग्रीवादिसाथलैकेरघुनाथपुष्पकविमानपरबैठिराजधानीअयोध्यामेंआयेतामध्यदीप्यमानकल्पतरुमध्येतलेनीचे